

सं. श्रो. वि./फरीदाबाद/41-85/15521.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं राज प्राप्ति आटोमेंटिव फँप्पोर्नेट लि. 1411, पथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री निरजन शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौषोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौषोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/1:245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री निरजन शर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो. वि./फरीदाबाद/32-85/15528.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं गैरहरावत इन्जी.० वर्क्स, प्लाट नं. 214, सेक्टर-२४ फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम सेवक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौषोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौषोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम सेवक की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 15 अप्रैल, 1985

सं. श्रो. वि./यमुनानगर/115-84/15680.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं जनरल मैनेजर, हरियाणा राज्य परिवहन, यमुनानगर (2) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री सुरेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौषोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, ग्रौषोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, यमुनानगर को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री सुरेश कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो. वि./फरीदाबाद/20-85/15687.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कल्च आटो नि., प्लाट नं. 111-112, प्लाटर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री ओम प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौषोगिक विवाद है;

प्रो. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौषोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून,

1983, के साथ अहंकृते हुवे प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/१९-श्रम/५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, करीदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला आयोगेन्द्र के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत आयोग के लिये निर्दिष्ट मामला है:—

क्या श्री ओम प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ. वि./रोहतक/240-84/15694.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मैं चेयरमैन, हरियाणा कोर्टेस्ट डिविनेशन, नौंद, चण्डोगड़ 2, कोर्टेस्ट डिविनेशन अफिसर, प्रोडक्शन इंट्रिजन, रोहतक के श्रमिक श्री राम नारायण तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांधनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, आयोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. ५६४१-१-श्रम-७०/३२५७३, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी प्रधिसूचना सं. ३८६४-ए. एन.ओ. (ई)-श्रम-७०/१३४८, दिनांक ३ मई, 1970 हारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे न्यायोचित तांचे लिखा मामला न्याय निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री राम नारायण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ. वि./करीदावाद/५१-८५/१५७०४.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मोर्य उद्योग लि., सोहना रोड, सैक्टर 25 बल्लवगढ़ के श्रमिक श्री श्री छुण मोर्य तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांधनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, आयोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. ५४१५-३-श्रम-६८/१५२५४, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. ११४९५-जी-श्रम १८-श्रम/५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, परीदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत आयोग के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री श्री छुण मोर्य की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ. वि./फरीदावाद/१८-८५/१५७१।—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मोर्य उद्योग लि., सोहना रोड सैक्टर-25, बल्लवगढ़, के श्रमिक श्री जय भगवान तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांधनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, आयोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. ५४१५-३-श्रम/६८/१५२५४, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. ११४९५-जी-श्रम १८-श्रम/५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री जय भगवान की सेवाओं का समापन न्यायोचित हथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह विस राहत का हकदार है ?

सं० ओ० वि०/१५७१८.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मै० माकिट कपेटी पिलुवेड़ा (जीन्द), के श्रमिक श्री गमेश्वर प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के बिच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, आद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० ९६४१-१-अम/७०/३२५७३, दिनांक ६ नवम्बर, १९७०, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं० ३८६४-ए-एस-ओ. (ई)-अम/७०/१३४८, दिनांक ४ मई, १९७०, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ७ के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भाष्मला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री गमेश्वर प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ० वि०/भिवानी/८९-८४/१५७२५.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है (1) मै० परिवहन आयुक्त, हरियाणा, न०गढ़, (2) हरियाणा राज्य परिवहन विवानी, के श्रमिक श्री हरि सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, आद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० ९६४१-१-अम/७०/३२५७३, दिनांक ६ नवम्बर, १९७०, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं० ३८६४-ए-एस-ओ. (ई)-अम/७०/१३४८, दिनांक ३ मई, १९७०, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ७ के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भाष्मला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री हरि सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ० वि०/सोनीपति/१५९-८३/१५७३३.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जनरल मैनेजर, दी सोनीपति फिस्ट्रीकट ए०. एपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर यूनियन लि. सोनीपति, के अधिकों श्री प्रेम सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस निए, अब, आद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० ९६४१-१-अम/७०/३२५७३, दिनांक ६ नवम्बर, १९७० के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं० ३८६४-ए-एस-ओ-(ई)-अम/७०/७०/१३४८, दिनांक ४ मई, १९७०, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ७ के अन्तर्गत अम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भाष्मला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट हरते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला । :—

क्या श्री प्रेम सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित नहीं ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक १५ अप्रैल, १९८५

सं० ओ० वि०/पानीपति/३२-८५/१५९२७.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सुपर रवै इण्टरप्राइजिज जी. टी. रोड, कलाल, के श्रमिक श्री बाबू लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बाबू नाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्री. वि./पानीपत/ 41-85/15933.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वज्रज इन्डस्ट्रीज, इन्डस्ट्रीयल एस्टिया, कुन्डपुरा रोड, करनाल, के श्रमिक श्री फकीर चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री फकीर चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 19 अप्रैल, 1985

सं. श्री. वि./फरीदाबाद/ 100-83/16863.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं परिवड़म आवृक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ (2) हरियाणा राज्य परिवड़म, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-६४-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री राम शंकर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्री. वि./फरीदाबाद/ 46-85/16871.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं माईको मशीन टूल्ज, 31-सी, डी.एल.एफ., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री भगवत प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-८८-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री भगवत प्रसाद हो सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?